प्राकृतिक खेती

कृषि कुंभ (अप्रैल, 2023),
खण्ड 02 भाग 11, पृष्ठ संख्या 101–107

प्राकृतिक खेती

डॉ. गणेश मस्के[1] एवं डॉ. अंकिता साहू[2]
[1](सहायक प्राध्यापक) ओरिएंटल विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)
[2](अतिथि प्राध्यापक) आर.वी.एस.के.वी.वी., ग्वालियर (म.प्र.), भारत।
Email Id: ganeshmaske@orientaluniversity.in

प्राकृतिक कृषि पारंपरिक भारतीय पद्धतियों से उद्धृत रासायनिक मुक्त कृषि की एक विधि है। हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक खेती को पुनर्योजी कृषि का एक रूप माना जाता है, जो ग्रह को बचाने के लिये एक प्रमुख रणनीति है। यह कृषि पद्वति का एक अनूठा मॉडल है जो कृषि–पारिस्थितिकी पर निर्भर करता है। इसका उद्देश्य उत्पादन की लागत को कम करना और एक स्थायी स्तर पर वापसी को बढ़ावा देना है। इसमे उर्वरक, कीटनाशक और गहन सिंचाई जैसे महंगे इनपुट की कोई आवश्यकता नहीं है। यह मिट्टी की सतह पर सूक्ष्मजीवों और केंचुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों के विखंडन को प्रोत्साहित करती है। इसमें प्रकृति पर उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फसल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

कृषि–पारिस्थितिकी में अच्छी तरह से आधारित, यह एक विविध कृषि प्रणाली है जो फसलों, पेड़ों और पशुधन को एकीकृत करती है, जिससे कार्यात्मक जैव विविधता के इष्टतम उपयोग की सुविधा मिलती है। इसे भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) के रूप में केन्द्र प्रायोजित योजनाय परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) के अंतर्गत बढ़ावा दिया जाता है। बीपीकेपी का उद्देश्य पारंपरिक स्वदेशी प्रथाओं को बढ़ावा देना है दृ जो बड़े पैमाने पर ऑन–फार्म बायोमास रीसाइक्लिंग पर आधारित हैं। जिसमें मल्चिंग और गाय के गोबर के उपयोग और मूत्र के मिश्रण तैयार करने पर जोर दिया गया है।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

पिछले कई वर्षों से खेती में काफी नुकसान देखने को मिल रहा है। इसका मुख्य कारण हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग है। इसमें लागत भी बढ़ रही है एवं भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे है जो काफी नुकसानदायक हैं। रासायनिक खेती से प्रकृति तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है। किसानों की पैदावार का आधा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशक में ही चला जाता है। यदि किसान खेती में अधिक मुनाफा या फायदा कमाना चाहता है तो उसे प्राकृतिक खेती की तरफ अग्रसर होना चाहिए। खेती में खाने पीने की चीजे काफी उगाई जाती है जिसे हम उपयोग में लेते है। इन खाद्य पदार्थों में जिंक और आयरन जैसे कई सारे खनिज तत्व उपस्थित होते है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होती है। रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते है। जिससे हमारे शरीर पर बुरा असर पड़ता है। रासायनिक खेती से मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। इस घटती हुई मिट्टी की उर्वरक क्षमता को देखते हुए जैविक खाद का उपयोग जरूरी हो गया है।

भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी)

भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति ,परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत एक उप–मिशन

है। जो सतत कृषि पर गठित राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए) के समुच्चय के भीतर आता है। भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (बीपीकेपी) का उद्देश्य पारंपरिक स्वदेशी पद्धतियों को बढ़ावा देना है जो किसानों को बाहरी रूप से खरीदे गए उत्पादों से मुक्ति दिलाती है। यह बायोमास मल्चिंग पर मुख्य रूप से जोर देते हुए ऑन–फार्म बायोमास रीसाइक्लिंगय गोबर–मूत्र मिश्रणों का उपयोगय और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सभी सिंथेटिक रासायनिक आदानों के बहिष्करण पर केंद्रित है।

प्राकृतिक खेती के प्रकार

1. **देशी खेती:** इसमें देशी जड़ी–बूटियों के साथ देशी गाय के गोबर से बने खाद के अलावा मटका खाद और जीवामृत का भी प्रयोग होता है!
2. **कुदरती खेती:** यह खेती संपूर्ण प्राकृतिक रूप से की जाती है। खेत में एक ही फसल के बीज बोने के बाद फल या फसल आने पर उसे तोड़ लिया जाता है और यह क्रिया वापस दोहराई जाती है।
3. **गौ आधारित खेती:** इसमें देशी गाय के गोबर मूत्र से बने जीवामृत, सजिवजल और मुख्य रूप से पंच–गव्य तत्व का उपयोग किया जाता है। खेत की जुताई के लिए सिर्फ बैल का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती के घटक

1. बीजामृत

बीजामृत एक प्राचीन, टिकाऊ कृषि तकनीक है। इसका उपयोग बीज, पौध या किसी रोपण सामग्री के लिए किया जाता है। यह नई जड़ों को फंगस से बचाने में कारगर है। बीजामृत एक किण्वित माइक्रोबियल समाधान है, जिसमें पौधों के लिए बहुत से लाभकारी माइक्रोब्स होते हैं, और इसे बीज उपचार के रूप में अनुप्रयोग किया जाता है। यह उम्मीद की जाती है कि लाभकारी माइक्रोब्स अंकुरित बीजों की जड़ों और पत्तियों को पोषित करेंगे और पौधों के स्वस्थ विकास में मदद करेंगे।

आवश्यक आदान: 5 किग्रा गाय का गोबर, 5 लीटर गौमूत्र, 50 ग्राम चूना, 1 किग्रा बांध मिट्टी, 20 लीटर पानी (100 किलो बीज के लिए)

बीजामृत तैयार करने की विधि:

चरण 1: 5 किग्रा गाय के गोबर को एक कपड़े में लें और टेप का उपयोग कर इसे बांध दें। कपड़े को 20 लीटर पानी में 12 घंटे के लिए लटका दें ।

चरण 2: साथ ही एक लीटर पानी लें और उसमें 50 ग्राम चूना मिलाकर रात भर के लिए रख दें।

चरण 3: अगली सुबह, बंडल को पानी में तीन बार लगातार निचोड़ें, ताकि गाय के गोबर के महत्वपूर्ण तत्व पानी में मिल जाएं।

चरण 4: एक मुट्ठी मृदा को लगभग 1 किलोग्राम जल मिश्रण में मिलाएं और अच्छी तरह से चलाएं।

चरण 5: मिश्रण में देसी गाय का 5 लीटर मूत्र और चूना पानी मिलाएं और अच्छी तरह से चलाएं।

बीज उपचार के रूप में अनुप्रयोग: किसी भी फसल के बीज में बीजामृत मिलाएंय उन्हें हाथ से मंढेय इन्हें अच्छी तरह सुखाकर बुवाई के लिए इस्तेमाल करें। फली के बीजों के लिए, बस उन्हें जल्दी से डुबाकर सूखने दें।

2. जीवामृत

जीवामृत मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को बढ़ावा देकर उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और प्रासंगिक पोषक तत्व भी प्रदान करता है। यह जैविक कार्बन और अन्य पोषक तत्वों का भी स्रोत है, किंतु इनकी मात्रा कम ही होती है। यह माइक्रोबियल गतिविधि के लिए एक प्राइमर की तरह काम करता है, और देशी केंचुओं की संख्या को भी बढ़ाता है।

आवश्यक इनपुट : 10 किलो ताजा गोबर, 5–10 लीटर गोमूत्र, 50 ग्राम चूना, 2 किलो गुड़, 2

किलो दाल का आटा, 1 किलो बांध मिट्टी और 200 लीटर पानी

जीवामृत तैयार करने की विधिः सामग्री को 200 लीटर पानी में मिलाकर अच्छी तरह से हिलाना चाहिए। इसके बाद मिश्रण को छायादार स्थान पर 48 घंटे के लिए किण्वन के लिए रख दें। इसे दो बार दृ एक बार सुबह और एक बार शाम दृ लकड़ी की छड़ से चलाना चाहिए। तैयार मिश्रण का अनुप्रयोग सिंचाई के पानी के माध्यम से या सीधे फसलों पर करें। इसे वेंचुरी (फर्टिगेशन डिवाइस) का उपयोग करके ड्रिप सिंचाई के माध्यम से भी अनुप्रयुक्त किया जा सकता है।

जीवामृत के अनुप्रयोगः इस मिश्रण का अनुप्रयोग प्रत्येक पखवाड़े में किया जाना चाहिए। इस या सीधे फसलों पर छिड़काव के जरिए या सिंचाई जल के साथ फसलों पर अनुप्रयोग किया जाना चाहिए। फल वाले पौधों के मामले में, इसका अनुप्रयोग एक–एक पेड़ पर किया जाना चाहिए। मिश्रण को 15 दिनों के लिए भंडारित किया जा सकता है।

3. मल्चिंग को जीवित फसलों और पुआल (मृत पौधा बायोमास) दोनों का उपयोग करके मिट्टी की सतह को कवर करने के रूप में परिभाषित किया जाता है ताकि नमी को संरक्षित किया जा सके, पौधों की जड़ों के आसपास मिट्टी का तापमान कम हो, मिट्टी का कटाव रोका जा सके और खरपतवार की वृद्धि को कम किया जा सके ।

4. व्हापासा का अर्थ है मिट्टी के दो कणों के बीच की गुहा में 50% वायु और 50% जलवाष्प का मिश्रण। यह मिट्टी का माइक्रॉक्लाइमेट है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी अधिकांश नमी और अपने कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं। यह पानी की उपलब्धता , उपयोग की दक्षता को बढ़ाता है और सूखे के विरूद्ध प्रतिरोधी बनाता है।

5. पौध संरक्षणः इस प्रक्रिया में जैविक मिश्रण का छिड़काव करना शामिल है जो कीट, रोग और खरपतवार की समस्याओं को रोकता है और पौधे की रक्षा करता है, और उनकी मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है।

अ) नीमास्त्र

नीमास्त्र का उपयोग रोगों की रोकथाम या निवारण के लिए किया जाता है, और पौधों को खाने और चूसने वाले कीड़ों या लार्वा को मारने के लिए किया जाता है। यह हानिकारक कीड़ों के प्रजनन को नियंत्रित करने में भी मदद करता है। नीमास्त्र तैयार करना बहुत आसान है और प्राकृतिक खेती के लिए यह सबसे अच्छा कीटनाशक है।

आवश्यक इनपुटः 200 लीटर पानी, 2 किलो गाय का गोबर, 10 लीटर गोमूत्र, 10 किलो नीम के पत्तों का बारीक पेस्ट।

नीमास्त्र तैयार करने की विधिः

चरण 1: एक ड्रम में 200 लीटर पानी लें और उसमें 10 लीटर गोमूत्र डालें। फिर देशी गाय का 2 किलो गोबर डालें। अब, 10 किलो नीम के पत्ते का बारीक पेस्ट या 10 किलो नीम के बीजों का गुद्दा मिलाएं।

चरण 2: फिर इसे एक लंबी छड़ी के साथ दायीं ओर चलाएं और इसे एक बोरी से ढक दें। इसे छाया में रखें क्योंकि यह धूप या बारिश के संपर्क में नहीं आना चाहिए। घोल को हर सुबह और शाम को दायी दिशा में चलाएं।

चरण 3: 48 घंटे के बाद, यह उपयोग के लिए तैयार हो जाता है। इसे 6 महीने तक उपयोग के लिए भंडारित किया जा सकता है । इसे पानी से पतला नहीं करना चाहिए।

चरण 4: तैयार घोल को मलमल के कपड़े में छान लें और फोलर स्प्रे के जरिए सीधे फसल पर छिड़काव करें।

नियंत्रणः सभी शोषक कीट, जैसिड्स, एफिड्स, सफेद मक्खी और छोटे कीड़े नीमास्त्र द्वारा नियंत्रित होते हैं।

ब) ब्रह्मास्त्रः–

यह पत्तियों से तैयार किया जाने वाला एक प्राकृतिक कीटनाशक है जिसमें कीटों को हटाने के लिए विशिष्ट क्षाराभ (एल्कालॉएड्स) होते हैं। यह फली और फलों में मौजूद सभी शोषक कीटों और छिपे हुए कीड़ों को नियंत्रित करता है।

आवश्यक इनपुटः 20 लीटर गौमूत्र, नीम के 2 किलो पत्ते, करंज के 2 किलो पत्ते , शरीफे के 2 किलो पत्ते और धतुरे के 2 किलो पत्ते।

ब्रह्मास्त्र तैयार करने की विधिः

चरण 1: एक बर्तन में 20 लीटर गौमूत्र ले और इसमें नीम की पत्तियों का 2 किलो बारीक पेस्ट, करंज की पत्तियों से तैयार 2 किलो पेस्ट, शरीफे की पत्तियों का 2 किलो पेस्ट, अंरडी के पत्तों का 2 किलो पेस्ट, और धतुरे के पत्तों का 2 किलो पेस्ट मिलाएं।

चरण 2: इसे धीमी आंच पर एक या दो उबाल (ओवरफ्लो लेवल) आने तक उबालें। घड़ी की दिशा में चलाएं, इसके बाद बर्तन को एक ढक्कन से ढंक दें और उबलने दें।

चरण 3: दूसरा उबाल आने पर, उबालना बंद कर दें और इसे 48 घंटे के लिए ठंडा करने के लिए रख दें ताकि पत्तियों में मौजूद एल्कालॉएड मूत्र में मिल जाएं। 48 घंटे के बाद, एक मलमल के कपड़े का उपयोग कर मिश्रण का छान लें और इसे भंडारित करें। छाया के नीचे बर्तनों (मिट्टी के बर्तन) या प्लास्टिक के ड्रमों में भंडारित करना बेहतर होता है। मिश्रण को 6 महीने तक उपयोग के लिए भंडारित किया जा सकता है।

अनुप्रयोग : 6–8 लीटर ब्रह्मास्त्र को 200 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल पर फोलियर स्प्रे के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। कीटों के क्रमण की गंभीरता के आधार पर इस अनुपात को निम्नानुसार परिवर्तित किया जा सकता हैः

100 लीटर पानी + 3 लीटर ब्रह्मास्त्र

15 लीटर पानी + 500 मिली ब्रह्मास्त्र

10 लीटर पानी + 300 मिली ब्रह्मास्त्र

स) अग्नेयास्त्रः–

इसका उपयोग सभी शोषक कीटों और कीड़ों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है ।

आवश्यक इनपुटः 20 लीटर गोमूत्र, 2 किलो नीम के पत्तों का गूदा, 500 ग्राम तंबाकू पाउडर, 500 ग्राम हरी मिर्च का पेस्ट, 250 ग्राम लहसुन का पेस्ट और 200 ग्राम हल्दी पाउडर

अग्नेयास्त्र तैयार करने की विधि :

चरण 1: एक कंटेनर में 200 लीटर गोमूत्र डालें। फिर 2 किलो नीम की पत्तियों का पेस्ट, 500 ग्राम तंबाकू पाउडर, 500 ग्राम हरी मिर्च का पेस्ट, 250 ग्राम लहसुन का पेस्ट और 200 ग्राम हल्दी पाउडर डालें ।

चरण 2: घोल को दायीं ओर चलाएं और इसे ढक्कन से ढक दें और झाग आने तक उबलने दें।

चरण 3: आग से हटाकर बर्तन को 48 घंटों के लिए ठंडा होने देने के लिए सीधी धूप से दूर किसी छायादार स्थान पर रख दें। इस किण्वन अवधि के दौरान अवयव को दिन में दो बार चलाएं।

चरण 4: 48 घंटे के बाद एक पतले मलमल के कपड़े से छान लें और भंडारित कर लें। इसे 3 महीने तक भंडारित किया जा सकता है ।

अनुप्रयोगः छिड़काव के लिए 6–8 लीटर अग्नेयास्त्र को 200 लीटर पानी में मिलाया जाना चाहिए। कीटों के पर्याक्रमण की गंभीरता के आधार पर निम्नलिखित अनुपात का प्रयोग किया जाना है ।

100 लीटर पानी + 3 लीटर अग्नेयास्त्र

15 लीटर पानी + 500 लीटर अग्नेयास्त्र

10 लीटरपानी + 300 लीटर अग्नेयास्त्र

द) दशपर्णी अर्क :

दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र और अग्नेयास्त्र के विकल्प के रूप में कार्य करता है। इसका उपयोग सभी प्रकार के कीटों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है और पर्याक्रमण के स्तर के आधार पर उपयोग किया जाता है ।

आवश्यक इनपुटः 200 लीटर पानी, 20 लीटर गाय मूत्र, 2 किलो गाय का गोबर, 500 ग्राम हल्दी पाउडर, 10 ग्राम हींग, 1 किलोग्राम तंबाकू पाउडर, 1 किलोग्राम मिर्च का गूदा, 500 ग्राम लहसुन पेस्ट, 200 ग्राम अदरक का पेस्ट, कोई भी 10 पत्तियां ।

दशपर्णी अर्क तैयार करने की विधि :

चरण 1: एक ड्रम में 200 लीटर पानी लें, उसमें 20 लीटर गोमूत्र और 2 किलो गाय का गोबर मिलाएं। इसे अच्छी तरह मिला लें और बोरी से ढककर 2 घंटे के लिए अलग रख दें।

चरण 2: मिश्रण में 500 ग्राम हल्दी पाउडर, 200 ग्राम अदरक का पेस्ट, 10 ग्राम हींग मिलाएं । इसे दायीं ओर अच्छी तरह से चलाएंय बोरे से ढककर रात भर के लिए रख दें।

चरण 3: अगली सुबह, 1 किलो तंबाकू पाउडर, 2 किलो गर्म हरी मिर्च का पेस्ट और 500 ग्राम लहसुन का पेस्ट डालें और इसे लकड़ी की छड़ी से दायीं ओर अच्छी तरह से चलाएं, बोरी से ढक दें और 24 घंटे के लिए छायादार स्थान पर छोड़ दें।

चरण 4: अगली सुबह, मिश्रण में किसी भी प्रकार की 10 पत्तियों (नीचे दी गई सूची से) का पेस्ट डालें।

चरण 5: अच्छी तरह से चलाएं और चटाई बैग के साथ ढक दें। इसे 30–40 दिनों के लिए किण्वन के लिए रख दें ताकि पत्तियों में मौजूद एल्कलॉइड मिश्रण में घुल जाए। दिन में दो बार चलाएं।

चरण 6: 40 दिन बाद इसे मलमल के कपड़े से छान लें और इस्तेमाल करें।

अनुप्रयोगः 6–8 लीटर तैयार कषायम को 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। नीम की पत्तियां– 3 किलो, पोंगमिआ पिन्नाटा पत्तियां –2 किलो, एनोना स्क्वामोसा की पत्तियां– 2 किलो, अरंडी के पत्ते (रिकिनस कोम्युनिस) – 2 किलो, धतूरा पत्ते (धतूरा मेटेल)–2 किलो, कैलेसथ्रोपिस प्रोसेरा की पत्तियां – 2 किलो , विटेक्स नेगुंडो की पत्तियां – 2 किग्रा, धतूरा स्ट्रैमोनियम की पत्तियां –2 किग्रा, नेरियम इंडिका की पत्तिय – 2 किग्रा, हिबिस्कस रोजा की पत्तियां – 2 किग्रा, आम के पत्ते (मैंगिफेरा इंडिका) –2 किग्रा, लैंटाना कैमरा की पत्तियां – 2 किग्रा , कैसिया तोरा के पत्ते –2 किलो, अमरूद के पत्ते (सिडियम गुआवा) – 2 किलो, अनार के पत्ते (पुनिका ग्रेनाटम) – 2 किलो, सहजन के पत्ते (मोरिंगा ओलीफेरा) – 2 किलो, कॉफी के पत्ते (कॉफी अरेबिका) – 2 किलो, महुआ के पत्ते (मदुका इंडिका) – 2 किलो, कोको के पत्ते (थियोब्रोमा कोको) – 2 किलो, बबूल नीलोटिका के पत्ते – 2 किलो, सोरालिया कोरिलिफोलिया के पत्ते – 2 किलो, करेले के पत्ते (मोमोर्डिका चरंतिया) – 2 किलो।

इ) कवकनाशीः– गाय के दूध और दही से तैयार किया गया कवकनाशी, कवक को नियंत्रित करने में बहुत प्रभावी पाया गया है।

तैयार करने की विधि : 3 लीटर दूध लें और उससे दही तैयार कर लें। क्रीम की सतह को हटा दें और फंगस की सिलेटी सतह बनने तक 3 से 5 दिनों के लिए छोड़ दें। इसे अच्छे से मथ लें, पानी में मिलाकर छानकर प्रभावित फसलों पर छिड़काव करें।

प्राकृतिक खेती का महत्व

भोजन के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट, 2017 में कहा गया है कि कृषि–पारिस्थितिक

विश्व की संपूर्ण आबादी को भोजन उपलब्ध कराने और उसका उपयुक्त पोषण सुनिश्चित करने के लिये पर्याप्त पैदावार देने में सक्षम है। ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ गाँव प्राकृतिक खेती की ओर आगे बढ़ते हुए ग्रामीण जीवन में रूपांतरण ला रहे हैं तथा शहरों में भी प्राकृतिक खेती के सफल प्रयोग हो रहे हैं। बिना सरकारी सहायता के इन उपलब्धियों को देखते हुए कल्पना की जा सकती है कि यदि इसमें राज्य का सहयोग प्राप्त हो तो बड़ी संख्या में किसानों को लाभ मिल सकता है। हालांकि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये लोगों को प्रोत्साहित कर रही है किंतु यह प्रोत्साहन प्रचार और जागरूकता के साथ–साथ सब्सिडी और आर्थिक स्तर पर भी होना चाहिये।

भारत बड़ी मात्रा में उर्वरकों पर सब्सिडी देता है। यह सब्सिडी वर्ष 1976–77 की 60 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्तमान में 75 हजार करोड़ रुपए हो गई है। प्राकृतिक खेती के अंतर्गत मात्र 23.02 मिलियन हेक्टेयर भूमि है जो भारत में कुल कृषि योग्य भूमि (181.95 मिलियन हेक्टेयर) की मात्र 1.27 प्रतिशत है।

प्राकृतिक खेती के सिद्धांत

1. पहला सिद्धांत है, खेतों में कोई जोताई नहीं करना। यानी न तो उनमें जुताई करना, और न ही मिट्टी पलटना। धरती अपनी जुताई स्वयं स्वाभाविक रूप से पौधों की जड़ों के प्रवेश तथा केंचुओं व छोटे प्राणियों, तथा सूक्ष्म जीवाणुओं के जरिए कर लेती है।
2. दूसरा सिद्धांत है, कि किसी भी तरह की तैयार खाद या रासायनिक उर्वरकों का उपयोग न किया जाए। इस पद्धति में हरी खाद और गोबर की खाद को ही उपयोग में लाया जाता है।
3. तीसरा सिद्धांत है, निंदाई–गुड़ाई न की जाए। न तो हलों से न शाकनाशियों के प्रयोग द्वारा। खरपतवार मिट्टी को उर्वर बनाने तथा जैव–बिरादरी में संतुलन स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
4. चौथा सिद्धांत, रसायनों पर बिल्कुल निर्भर न करना है। जोतने तथा उर्वरकों के उपयोग जैसी गलत प्रथाओं के कारण जब से कमजोर पौधे उगना शुरू हुए, तब से ही खेतों में बीमारियां लगने तथा कीट–असंतुलन की समस्याएं खड़ी होनी शुरू हुई। छेड़छाड़ न करने से प्रकृति–संतुलन बिल्कुल सही रहता है।

प्राकृतिक खेती के फायदे

विश्व की आबादी वर्ष 2050 तक लगभग 10 अरब तक हो जाने का पूर्वानुमान है। यह उम्मीद की जाती है कि मामूली आर्थिक विकास की स्थिति में, इससे कृषि मांग में वर्ष 2013 की मांग की तुलना में 50% तक की वृद्धि होगी (एफएओ 2017, खाद्य और कृषि का भविष्य – रुझान और चुनौतियां)। खाद्य उत्पादन का विस्तार और आर्थिक विकास का अक्सर प्राकृतिक पर्यावरण पर बहुत प्रभाव पड़ता है। पिछले कुछ वर्षों में वन आच्छादन और जैव विविधता में उल्लेखनीय कमी आई है। भूजल स्रोत भी तेजी से कम हो रहे हैं। उच्च इनपुट, संसाधन प्रधान खेती प्रणाली के कारण बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, पानी की कमी, मृदा क्षरण और ग्रीनहाउस गैस का उच्च स्तरीय उत्सर्जन हुआ है।

कृषि–पारिस्थितिकी, कृषि–वानिकी, जलवायु–स्मार्ट कृषि और संरक्षण कृषि जैसे 'समग्र' दृष्टिकोणों की दिशा में एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया एक आवश्यकता है। प्राकृतिक खेती सहित कृषि–पारिस्थितिकी जैसी परिपाटियों के परिणामस्वरूप आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए बिना बेहतर पैदावार होती है।

1. प्राकृतिक खेती का उद्देश्य श्रम, मृदा, उपकरण जैसे उत्पादन कारकों को अधिकतम करके और उर्वरकों, हर्बीसाइड

और कीटनाशकों जैसे गैर–प्राकृतिक इनपुटों का उपयोग न करते हुए पैदावार बढ़ाना है।

2. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का विवेकहीन प्रयोग मिट्टी और पर्यावरण के लिए खतरा है। इसने फसल प्रतिक्रिया अनुपात पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और मिट्टी में पोषक तत्वों का असंतुलन पैदा कर दिया है।
3. प्राकृतिक खेती का उद्देश्य किसानों को घरेलू संसाधनों से आवश्यक पोषक तत्व और पादप संरक्षण सामग्री तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करके उत्पादन लागत में भारी कटौती करना है ।
4. उर्वरकों और कीटनाशकों का किसानों के साथ–साथ उपभोक्ताओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
5. प्राकृतिक खेती एक पूर्व–प्रतिष्ठित परिपाटी है जो जल धारण क्षमता में सुधार करने के लिए प्रमाणित है। इसमें न्यूनतम पानी की खपत की आवश्यकता होती है ।
6. प्राकृतिक खेती का उद्देश्य एक कृषि पारिस्थितिकी ढांचे को अपनाए जाने को बढ़ावा देकर जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं से जुड़े जोखिमों को कम करना है।
7. प्राकृतिक खेती केवल रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बिना खेती नहीं है, बल्कि यह मिट्टी की गुणवत्ता और मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए लाभकारी माइक्रोब्स का लाभ उठाने के अतिरिक्त आयाम वाली जैविक खेती है।
8. प्राकृतिक खेती से ग्रामीण रोजगार मिलता है और छोटे खेतों की वित्तीय व्यवहार्यता बढ़ती है। प्राकृतिक खेती, भारत में प्रत्यक्ष बेरोजगारी और प्रच्छन्न बेरोजगारी दोनों की दीर्घकालिक समस्याओं को कम कर सकती है।

प्राकृतिक खेती के बारे में सफलता की कहानी

हिमांचल प्रदेश के किसान अजय रतन, प्राकृतिक खेती: सुभाष पालेकर तकनीक का अभ्यास करने वाले किसान हैं जिन्हें राज्य सरकार द्वारा कृषि विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया है।

प्रौद्योगिकी: सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पद्धति का बीजामृत, जीवामृत, आच्छादम और वाप्स, कषायम (काढ़े), 25 का बीघा भूमि में समय से उपयोग किया गया। लगाई गई फसलों में गन्ने की फसलें गन्ना, गेहूं, मटर, टमाटर, शिमला मिर्च, मसूर, कोलोसिया, बॉटलगार्ड शामिल थीं।

प्रभाव: रतन की आय में वृद्धि हुई थी क्योंकि इनपुट लागत में काफी कमी आई थी और उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई थी।

प्राकृतिक खेती के तहत भूमि	पारंपरिक खेती	प्राकृतिक खेती
25 बीघा	खर्च: रु. 30,000 आय: रु. 450000	खर्च: रु. 3000 आय: रु. 5,00,000

स्रोत: प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना, हिमाचल प्रदेश सरकार

सतत विकास लक्ष्यों के लिए प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक कृषि पद्धतियां– सामाजिक – आर्थिक – पर्यावरण – अनुकूल खेती 2030 तक संयुक्त राष्ट्र– सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करेगी। प्राकृतिक खेती जैसी कृषि–पारिस्थितिकी पद्धतियाँ एक लागत प्रभावी और पारिस्थितिक रूप से अनुकूल विकल्प होने के कारण सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होंगी। कृषि लागत को कम करके, वे बेहतर आय और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित कर सकते हैं, जो परिणामस्वरूप, गरीबी को कम करने, लैंगिक समानता लाने और स्थायी उत्पादन और खपत पध्यति सुनिश्चित करने में सहायक होगा।